بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

وَالتِّيۡنِ وَالزَّيۡتُوۡنِ ۙ‏ ﴿۱﴾ وَطُوۡرِ سِيۡنِيۡنَ ۙ‏ ﴿۲﴾ وَهٰذَا الۡبَلَدِ الۡاَمِيۡنِ ۙ‏ ﴿۳﴾

इन्जीर की क़सम और ज़ैतून[2] और तूरे सीना[3] और इस अमान वाले शहर की[4]

لَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ فِىۡۤ اَحۡسَنِ تَقۡوِيۡمٍ ﴿۴﴾ ثُمَّ رَدَدۡنٰهُ اَسۡفَلَ

बेशक हम ने आदमी को अच्छी सूरत पर बनाया फिर उसे हर नीची से नीची सी हालत

سٰفِلِيۡنَ ۙ‏ ﴿۵﴾ اِلَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمۡ اَجۡرٌ غَيۡرُ

की त़रफ़ फेर दिया[5] मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उन्हें

مَمۡنُوۡنٍ ؕ‏ ﴿۶﴾ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعۡدُ بِالدِّيۡنِ ؕ‏ ﴿۷﴾ اَلَيۡسَ اللّٰهُ بِاَحۡكَمِ

बेह़द सवाब है[6] तो अब[7] क्या चीज़ तुझे इन्साफ़ के झुटलाने पर बाइस है[8] क्या अल्लाह सब ह़ाकिमों से बढ़ कर

الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿۸﴾ ع

ह़ाकिम नहीं

ع ٢٨

اٰياتها ١٩ | ٩٦ سُوۡرَةُ الۡعَلَقِ مَكِّيَّةٌ ١ | رکوعها ١

सूरए अ़लक़ मक्किय्या है, इस में उन्नीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

1 : "सूरए वत्तीन" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें, चोंतीस कलिमे, एक सो पांच ह़र्फ़ हैं। 2 : इन्जीर निहायत उ़म्दा मेवा है जिस में फ़ुज़्ला नहीं, सरीउ़ल हज़्म, कसीरुन्नफ़्अ़, मुलय्यिन, मुहल्लिल, दाफ़ेए रेग, मुफ़त्तिहे सुद्दए जिगर, बदन का फ़र्बा करने वाला, बल्ग़म को छांटने वाला। ज़ैतून एक मुबारक दरख़्त है इस का तेल रोशनी के काम में भी लाया जाता है और बजाए सालन के भी खाया जाता है, येह वस्फ़ दुन्या के किसी तेल में नहीं, इस का दरख़्त ख़ुश्क पहाड़ों में पैदा होता है जिन में दुहनिय्यत (चिक्नाहट) का नामो निशान नहीं, बिग़ैर ख़िदमत के परवरिश पाता है, हज़ारों बरस रहता है, इन चीज़ों में क़ुदरते इलाही के आसार ज़ाहिर हैं। 3 : येह वोह पहाड़ है जिस पर अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام को कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया और "सीना" उस जगह का नाम है जहां येह पहाड़ वाक़ेअ़ है या ब मा'ना ख़ुश मन्ज़र के है जहां कसरत से फलदार दरख़्त हों। 4 : या'नी मक्कए मुकर्रमा की 5 : या'नी बुढ़ापे की त़रफ़ जब कि बदन ज़ईफ़, आ'ज़ा नाकारा, अ़क़्ल नाक़िस, पुश्त ख़म, बाल सफ़ेद हो जाते हैं, जिल्द में झुर्रियां पड़ जाती हैं, अपने ज़रूरिय्यात अन्जाम देने में मजबूर हो जाता है या येह मा'ना हैं कि जब उस ने अच्छी शक्ल व सूरत की शुक्र गुज़ारी न की और ना फ़रमानी पर जमा रहा और ईमान न लाया तो जहन्नम के अस्फ़ल तरीन दरकात (सब से नीचे वाले त़ब्क़ों) को हम ने उस का ठिकाना कर दिया। 6 : अगर्चे ज़ो'फ़े पीरी के बाइस वोह जवानी की त़रह कसीर त़ाअ़तें बजा न ला सकें और उन के अ़मल कम हो जाएं लेकिन करमे इलाही से उन्हें वोही अज्र मिलेगा जो शबाब और क़ुव्वत के ज़माने में अ़मल करने से मिलता था और इतने ही अ़मल उन के लिखे जाएंगे। 7 : इस बयाने क़ातेअ़ व बुरहाने सातेअ़ के बा'द ऐ काफ़िर ! 8 : और तू अल्लाह तआ़ला की येह क़ुदरतें देखने के बा वुजूद क्यूं बअ़्स व ह़िसाब व जज़ा का इन्कार करता है। 1 : "सूरए इक़्रअ"

www.dawateislami.net

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ﴿۲﴾ اِقْرَاْ

पढ़ो अपने रब के नाम से[2] जिस ने पैदा किया[3] आदमी को ख़ून की फटक से बनाया पढ़ो[4]

وَ رَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ﴿۳﴾ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ﴿۴﴾ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ

और तुम्हारा रब ही सब से बड़ा करीम जिस ने क़लम से लिखना सिखाया[5] आदमी को सिखाया जो न

یَعْلَمْ ؕ﴿۵﴾ كَلَّاۤ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَیَطْغٰۤی ۙ﴿۶﴾ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰی ؕ﴿۷﴾ اِنَّ اِلٰی

जानता था[6] हां हां बेशक आदमी सरकशी करता है इस पर कि अपने आप को ग़नी समझ लिया[7] बेशक तुम्हारे

رَبِّكَ الرُّجْعٰی ؕ﴿۸﴾ اَرَءَیْتَ الَّذِیْ یَنْهٰی ۙ﴿۹﴾ عَبْدًا اِذَا صَلّٰی ؕ﴿۱۰﴾

रब ही की त़रफ़ फिरना है[8] भला देखो तो जो मन्अ़ करता है बन्दे को जब वोह नमाज़ पढ़े[9]

اَرَءَیْتَ اِنْ كَانَ عَلَی الْهُدٰۤی ۙ﴿۱۱﴾ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰی ؕ﴿۱۲﴾ اَرَءَیْتَ اِنْ

भला देखो तो अगर वोह हिदायत पर होता या परहेज़ गारी बताता तो क्या ख़ूब था भला देखो तो अगर

كَذَّبَ وَ تَوَلّٰی ؕ﴿۱۳﴾ اَلَمْ یَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ یَرٰی ؕ﴿۱۴﴾ كَلَّا لَىٕنْ لَّمْ یَنْتَهِ ۙ۬

झुटलाया[10] और मुंह फेरा[11] तो क्या ह़ाल होगा क्या न जाना[12] कि **अल्लाह** देख रहा है[13] हां हां अगर बाज़ न आया[14]

इस को "सूरए अ़लक़" भी कहते हैं। येह सूरत मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, उन्नीस आयतें, बानवे कलिमे, दो सो अस्सी ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक येह सूरत सब से पहले नाज़िल हुई और इस की पहली पांच आयतें "مَالَمْ یَعْلَمْ" तक ग़ारे हिरा में नाज़िल हुईं। फ़िरिश्ते ने आ कर ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : "اِقْرَاْ" या'नी पढ़िये ! फ़रमाया : हम पढ़े नहीं। उस ने सीने से लगा कर बहुत ज़ोर से दबाया, फिर छोड़ कर "اِقْرَاْ" कहा, फिर आप ने वोही जवाब दिया, तीन मरतबा ऐसा ही हुवा फिर उस के साथ साथ आप ने "مَالَمْ یَعْلَمْ" तक पढ़ा। **2 :** या'नी क़िराअत की इब्तिदा अदबन **अल्लाह** तआ़ला के नाम से हो। इस तक़्दीर पर आयत से साबित होता है कि क़िराअत की इब्तिदा "بِسْمِ اللّٰه" के साथ मुस्तह़ब है। **3 :** तमाम ख़ल्क़ को **4 :** दोबारा पढ़ने का हुक्म ताकीद के लिये है और येह भी कहा गया है कि दोबारा क़िराअत के हुक्म से मुराद येह है कि तब्लीग़ और उम्मत के ता'लीम के लिये पढ़िये। **5 :** इस से किताबत की फ़ज़ीलत साबित हुई और दर ह़क़ीक़त किताबत में बड़े मनाफ़ेअ़ हैं, किताबत ही से उ़लूम ज़ब्त में आते हैं, गुज़रे हुए लोगों की ख़बरें और उन के अह़वाल और उन के कलाम मह़फ़ूज़ रहते हैं। किताबत न होती तो दीन व दुन्या के काम क़ाइम न रह सकते। **6 :** आदमी से मुराद यहां ह़ज़रते आदम हैं और जो उन्हें सिखाया उस से मुराद "इल्मे अस्मा"। और एक क़ौल येह है कि इन्सान से मुराद यहां सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं कि आप को **अल्लाह** तआ़ला ने जमीअ़ अश्या के उ़लूम अ़ता फ़रमाए। (معالم وخازن) **7 :** या'नी ग़फ़्लत का सबब दुन्या की मह़ब्बत और माल पर तकब्बुर है। येह आयतें अबू जहल के ह़क़ में नाज़िल हुईं, उस को कुछ माल हाथ आ गया था तो उस ने लिबास और सुवारी और खाने पीने में तकल्लुफ़ात शुरूअ़ किये और उस का ग़ुरूर और तकब्बुर बहुत बढ़ गया। **8 :** या'नी इन्सान को येह बात पेशे नज़र रखनी चाहिये और समझना चाहिये कि उसे **अल्लाह** की त़रफ़ रुजूअ़ करना है तो सरकशी व तुग़यान और ग़ुरूरो तकब्बुर का अन्जाम अ़ज़ाब होगा। **9 शाने नुज़ूल :** येह आयत भी अबू जहल के ह़क़ में नाज़िल हुई उस ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ किया था और लोगों से कहा था कि अगर मैं उन्हें ऐसा करता देखूंगा तो (مَعَاذَ الله) गरदन पाउं से कुचल डालूंगा और चेहरा ख़ाक में मिला दूंगा, फिर वोह इसी इरादए फ़ासिदा से ह़ुज़ूर के नमाज़ पढ़ते में आया और ह़ुज़ूर के क़रीब पहुंच कर उल्टे पाउं पीछे भागा हाथ आगे बढ़ाए हुए जैसे कोई किसी मुसीबत को रोकने के लिये हाथ आगे बढ़ाता है, चेहरे का रंग उड़ गया, आ'ज़ा कांपने लगे। लोगों ने कहा : क्या ह़ाल है ? कहने लगा : मेरे और मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के दरमियान एक ख़न्दक़ है जिस में आग भरी हुई है और दहशत नाक परिन्द बाज़ू फैलाए हुए हैं। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर वोह मेरे क़रीब आता तो फ़िरिश्ते उस का उ़ज़्व उ़ज़्व जुदा कर डालते। **10 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को **11 :** ईमान लाने से **12 :** अबू जहल ने **13 :** उस के फ़े'ल को, पस जज़ा देगा **14 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ईज़ा और आप की तक्ज़ीब से।

www.dawateislami.net

لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِيَةِ ﴿١٥﴾ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿١٦﴾ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ﴿١٧﴾

तो हम ज़रूर पेशानी के बाल पकड़ कर खींचेंगे[15] कैसी पेशानी झूटी ख़ताकार अब पुकारे अपनी मजलिस को[16]

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾ كَلَّا ۭ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿١٩﴾ السجدة

अभी हम सिपाहियों को बुलाते हैं[17] हां हां उस की न सुनो और सज्दा करो[18] और हम से क़रीब हो जाओ

ع ١٩ ٢١ السجدة ١٣

ايـاتها ٥ ﴿٩٧ سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ ٢٥﴾ ركوعها ١

सूरए क़द्र मक्किय्या है, इस में पांच आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्‌रबान रह़्‌म वाला[1]

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا لَیْلَةُ الْقَدْرِ ﴿٢﴾

बेशक हम ने इसे[2] शबे क़द्र में उतारा[3] और तुम ने क्या जाना क्या शबे क़द्र

لَیْلَةُ الْقَدْرِ ۙ۬ خَیْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ وَالرُّوْحُ فِیْهَا

वقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर[4] इस में फ़िरिश्ते और जिब्रील उतरते हैं[5]

15 : और उस को जहन्नम में डालेंगे। **16 शाने नुज़ूल :** जब अबू जह्ल ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नमाज़ से मन्अ़ किया तो हुज़ूर ने उस को सख़्ती से झिड़क दिया, इस पर उस ने कहा कि आप मुझे झिड़क्ते हैं, ख़ुदा की क़सम मैं आप के मुक़ाबिल नौ जवान सुवारों और पैदलों से इस जंगल को भर दूंगा, आप जानते हैं कि मक्कए मुकर्रमा में मुझ से ज़ियादा बड़े जथ्थे और मजलिस वाला कोई नहीं है। **17 :** या'नी अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों को। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर वोह अपनी मजलिस को बुलाता तो फ़िरिश्ते उस को बिल ए'लान गिरिफ़्तार करते। **18 :** या'नी नमाज़ पढ़ते रहो **1 :** "सूरतुल क़द्र" मदनिय्या व बक़ौले मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, पांच आयतें, तीस कलिमे, एक सो बारह ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी क़ुरआने मजीद को लौहे मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या की त़रफ़ यकबारगी **3 :** शबे क़द्र शरफ़ो बरकत वाली रात है। इस को शबे क़द्र इस लिये कहते हैं कि इस शब में साल भर के अह़काम नाफ़िज़ किये जाते हैं और मलाएका को साल भर के वज़ाइफ़ व ख़िदमात पर मामूर किया जाता है। येह भी कहा गया है कि इस रात की शराफ़त व क़द्र के बाइ़स इस को शबे क़द्र कहते हैं और येह भी मन्क़ूल है कि चूंकि इस शब में आ'माले सालिह़ा मक़्बूल होते हैं और बारगाहे इलाही में उन की क़द्र की जाती है इस लिये इस को शबे क़द्र कहते हैं। अह़ादीस में इस शब की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं : बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि जिस ने इस रात में ईमान व इख़्लास के साथ शब बेदारी कर के इ़बादत की **अल्लाह** तआ़ला उस के साल भर के गुनाह बख़्श देता है। आदमी को चाहिये कि इस शब में कसरत से इस्तिग़्फ़ार करे और रात इ़बादत में गुज़ारे। साल भर में शबे क़द्र एक मरतबा आती है और रिवायाते कसीरा से साबित है कि वोह रमज़ानुल मुबारक के अ़शरए अख़ीरा में होती है और अक्सर इस की भी त़ाक़ रातों में से किसी रात में। बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र होती है, येही ह़ज़रत इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है। इस रात के फ़ज़ाइले अ़ज़ीमा अगली आयतों में इर्शाद फ़रमाए जाते हैं : **4 :** जो शबे क़द्र से ख़ाली हों, इस एक रात में नेक अ़मल करना हज़ार रातों के अ़मल से बेहतर है। ह़दीस शरीफ़ में है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उम्मे गुज़श्ता के एक शख़्स का ज़िक्र फ़रमाया जो तमाम रात इ़बादत करता था और तमाम दिन जिहाद में मसरूफ़ रहता था, इस त़रह़ उस ने हज़ार महीने गुज़ारे थे, मुसल्मानों को इस से तअ़ज्जुब हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने आप को शबे क़द्र अ़त़ा फ़रमाई और येह आयत नाज़िल की, कि शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। (اخرجه ابن جرير عن طريق مجاهد) येह **अल्लाह** तआ़ला का अपने ह़बीब पर करम है कि आप के उम्मती शबे क़द्र की एक रात इ़बादत करें तो इन का सवाब पिछली उम्मत के हज़ार माह इ़बादत करने वालों से ज़ियादा हो। **5 :** ज़मीन की त़रफ़, और जो बन्दा खड़ा या बैठा यादे इलाही में मश्ग़ूल होता है उस को सलाम करते हैं और उस के ह़क़ में दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार करते हैं।

www.dawateislami.net